संस्कृत पाठ्यक्रम

(2023-2024)

VI, VII & VIII

VI

संस्कृत

संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य :-

1. संस्कृतभाषा एवं साहित्य के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना ।
2. अर्थबोध के साथ संस्कृत गद्यांश को पढ़ने की क्षमता विकसित करना तथा संस्कृत श्लोकों को स्मरण कर सस्वर वाचन करने की योग्यता उत्पन्न करना ।
3. संस्कृतभाषा का सामान्यज्ञान कराना जिससे संस्कृत के सरलांशों को सुनकर या पढ़कर विद्यार्थी समझ सकें एवं मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति कर सकें ।
4. संस्कृत में श्रवण-भाषण-वाचन से लेखन-कौशल तथा भाषागत कौशल का विकास करना।
5. दृश्य-श्रव्य साधनों को ध्यानपूर्वक देखकर, पढ़कर तथा सुनकर उन पर अपेक्षित क्रियाएँ करने में समर्थ होना ।
6. विद्यार्थियों में सौन्दर्यबोध, कल्पनाशीलता तथा चिन्तन की क्षमता का विकास करना।

सामान्य निर्देश :

1. रुचिरा में से परीक्षा हेतु पठित गद्यांशों, श्लोकों, संवादों पर आधारित प्रश्नोत्तर का अभ्यास करवाया जाएगा । भाषिक कार्य में जैसे – प्रश्न-निर्माण, पर्यायवाची, विलोम शब्द,कर्तृक्रिया-पदचयन, विशेषण-विशेष्य, संज्ञा, सर्वनाम-प्रयोग आदि करवाये जाएंगे ।
2. रुचिरा के पाठ्यक्रमानुसार पाठों का सम्पूर्ण अभ्यास तथा समस्त शब्दार्थ करवाये जाएंगे।
3. पाठों का कथाक्रम और श्लोकों का अन्वय परीक्षा में आएगा ।
4. कारक, संख्या, विशेषण-विशेष्य सम्बन्धित नियम, अव्यय, शब्दरूप और धातुरूप वाक्यों में आएंगे ।
5. प्रश्नपत्र संस्कृतभाषा में आएगा ।

पाठ्य-पुस्तकें - 1. रुचिरा (प्रथमो भाग:)
2. संस्कृत व्याकरण मणिका (6)

प्रथम सत्र

1. रुचिरा-

1. प्रथमः पाठः – शब्दपरिचय: - I
2. द्वितीयः पाठ: – शब्दपरिचय: - II
3. तृतीयः पाठ: – शब्दपरिचय: - III
4. चतुर्थः पाठ: – विद्यालयः
5. सप्तमः पाठ: – बकस्य प्रतीकारः

2. व्याकरण-

1. वर्णसंयोजनम् , वर्णवियोजनम्
2. कारक और विभक्तियों का सामान्य परिचय (वाक्यों में)
3. विशेषण प्रकरण – विशेषण–विशेष्य सम्बन्धित नियम (वाक्यों में प्रयोग)
4. शब्द रूप (वाक्यों में) – बालक, बालिका, फल, किम् (पुल्लिंग में)
5. धातु रूप (वाक्यों में) – (लट् और लृट् लकार) धातुएँ - पठ्, गम्, पा, नी
6. वाक्यसंशोधनम् –वचन, लिंग, पुरुष, लकार, कारक तथा विशेषण-विशेष्य पर आधारित |

3. 1. अपठित–गद्यांश
2. चित्रवर्णनम् – प्रदत्तचित्र के आधार पर संस्कृत में वाक्य
3. हिंदी से संस्कृत मे अनुवाद (पाँच वाक्यों का)

द्वितीय सत्र

1. रुचिरा-

1. षष्ठः पाठः – समुद्रतटः
2. नवमः पाठः – क्रीडास्पर्धा
3. एकादशः पाठः – दशमः त्वं असि
4. द्वादशः पाठः – विमानयानं रचयाम
5. त्रयोदशः पाठः – अहह आः च

2. व्याकरण-

1. अव्यय प्रयोगः (रिक्त स्थान के रूप में) – समस्त अव्यय शब्द
2. संख्या (वाक्यों में) – 1 से 20 तक
   क्रमवाचक (पूरणार्थक) संख्या - प्रथम से दशम तक, पुल्लिंग में सभी विभक्तियों में प्रायोगिक ज्ञान
3. शब्द रूप (वाक्यों में) – भानु, अस्मद्, युष्मद्, किम् (स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिंङ्ग में)
4. धातुरूप (वाक्यों में) – (लट् और् लृट् लकार) धातुएँ - स्था, लिख्, दृश् नम्
5. वाक्य संशोधनम् – वचन, लिंग, पुरुष, लकार, कारक तथा विशेषण-विशेष्य पर आधारित।

3.

1. अपठित –गद्यांश
2. पत्रलेखनम् – संकेताधारितं पत्रम्
3. चित्रवर्णनम् – प्रदत्तचित्र के आधार पर संस्कृत में वाक्य
4. हिंदी से संस्कृत मे अनुवाद (पाँच वाक्यों का)

VII

संस्कृत

संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य :-

1. संस्कृतभाषा एवं साहित्य के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना ।
2. अर्थबोध के साथ संस्कृत गद्यांश को पढ़ने की क्षमता विकसित करना तथा संस्कृत श्लोकों को स्मरण कर सस्वर वाचन करने की योग्यता उत्पन्न करना ।
3. संस्कृतभाषा का सामान्यज्ञान कराना जिससे संस्कृत के सरलांशों को सुनकर या पढ़कर विद्यार्थी समझ सकें एवं मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति कर सकें ।
4. संस्कृत में श्रवण-भाषण-वाचन से लेखन-कौशल तथा भाषागत कौशल का विकास करना।
5. दृश्य-श्रव्य साधनों को ध्यानपूर्वक देखकर, पढ़कर तथा सुनकर उन पर अपेक्षित क्रियाएँ करने में समर्थ होना ।
6. विद्यार्थियों में सौन्दर्यबोध, कल्पनाशीलता तथा चिन्तन की क्षमता का विकास करना।

सामान्य निर्देश :

1. रुचिरा में से परीक्षा हेतु पठित गद्यांशों, श्लोकों, संवादों पर आधारित प्रश्नोत्तर का अभ्यास करवाया जाएगा । भाषिक कार्य में जैसे – प्रश्न-निर्माण, पर्यायवाची, विलोम शब्द, संस्कृत में शब्दों के अर्थ, कर्तृक्रियापदचयन, विशेषण-विशेष्य, संज्ञा, सर्वनाम-प्रयोग आदि करवाये जाएंगे ।
2. रुचिरा के पाठ्यक्रमानुसार पाठों का सम्पूर्ण अभ्यास तथा समस्त शब्दार्थ करवाये जाएंगे।
3. श्लोकों का अन्वय रिक्तस्थान के रूप में आएगा ।
4. अव्यय, सन्धि, प्रत्यय, संख्या, शब्दरूप और धातुरूप वाक्यों में आएंगे ।
5. प्रश्नपत्र संस्कृतभाषा में आयेगा ।

पाठ्य-पुस्तकें - 1. रुचिरा (द्वितीयो भाग:)
2. संस्कृत व्याकरण मणिका (7)

प्रथम सत्र

1.रुचिरा-

1. प्रथम: पाठ: – सुभाषितानि
2. द्वितीय: पाठ: – दुर्बुद्धि: विनश्यति
3. तृतीय: पाठ – स्वावलम्बनम्
4. चतुर्थ:पाठः – पण्डिता रमाबाई
5. अष्टमः पाठः – अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि

2. व्याकरण-

1. अव्यय (रिक्तस्थान के रूप में) – समस्त अव्यय शब्द
2. सन्धि (वाक्यों में) - दीर्घ सन्धि:, गुण सन्धि:
3. प्रत्यय (वाक्यों में) - क्त्वा प्रत्यय
4. शब्दरूप (वाक्यों में) – कवि, मधु, नदी, तद् (तीनों लिंगों में)
5. धातुरूप् (वाक्यों में) – (लट्, लृट्, लङ्ग लकारों में) धातुएँ – पा, चुर् स्था, दृश्
6. वाक्यसंशोधनम् – वचन, लिंग, लकार, पुरुष तथा विशेषण-विशेष्य पर आधारित।

3 . 1 अपठित गद्यांश
2. पत्रलेखनम् – संकेताधारितं पत्रम्
3. चित्रवर्णनम् – प्रदत्त चित्र के आधार पर संस्कृत में वाक्य
4. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद (पॉंच वाक्यों का)

द्वितीय सत्र

I रुचिरा-

1. पञ्चमः पाठः – सदाचारः
2. सप्तमः पाठः – त्रिवर्णः ध्वजः
3. नवमः पाठः – विश्वबन्धुत्वम्
4. दशमः पाठः – समवायो हि दुर्जयः
5. द्वादशः पाठः – अमृतं संस्कृतम्

2 व्याकरण-

1. उपपद विभक्तियां - उभयतः, परितः, प्रति, सह, विना, नमः, दा, बहिः, अधः, उपरि, निपुणः इन पदों के साथ उपयुक्त विभक्तियों का प्रयोग । (उपपद विभक्तियों पर आधारित अशुद्धि- संशोधन, रिक्तस्थानादि)
2. संख्या (वाक्यों में) 1 से 50 तक
   क्रमवाचक (पूरणार्थक) संख्या - प्रथम से दशम तक तीनों लिंगों में सभी विभक्तियों में प्रायोगिक ज्ञान |
3. प्रत्ययः (वाक्यों में) – ल्यप् प्रत्यय
4. शब्द रूप (वाक्यों में) – मति, वारि, पितृ, एतद् (तीनों लिंगों में)
5. धातुरूप (वाक्यों में) - (लट् , लृट् , लङ् लकारों में) धातुएँ - पच्, लिख्, वस्, कृ

3 1. अपठित गद्यांश
2. पत्रलेखनम् - संकेताधारितं पत्रलेखनम्
3. चित्रवर्णनम् – प्रदत्त चित्र के आधार पर संस्कृत में वाक्य
4. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद (पॉंच वाक्यों का)

VIII

संस्कृत

संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य :-

1. संस्कृतभाषा एवं साहित्य के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना ।
2. अर्थबोध के साथ संस्कृत गद्यांश को पढ़ने की क्षमता विकसित करना तथा संस्कृत श्लोकों को स्मरण कर सस्वर वाचन करने की योग्यता उत्पन्न करना ।
3. संस्कृतभाषा का सामान्यज्ञान कराना जिससे संस्कृत के सरलांशों को सुनकर या पढ़कर विद्यार्थी समझ सकें एवं मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति कर सकें ।
4. संस्कृत में श्रवण-भाषण-वाचन से लेखन-कौशल तथा भाषागत कौशल का विकास करना।
5. दृश्य-श्रव्य साधनों को ध्यानपूर्वक देखकर, पढ़कर तथा सुनकर उन पर अपेक्षित क्रियाएँ करने में समर्थ होना ।
6. विद्यार्थियों में सौन्दर्यबोध, कल्पनाशीलता तथा चिन्तन की क्षमता का विकास करना।

सामान्य निर्देश :

1. रुचिरा में से परीक्षा हेतु पठित गद्यांशों, श्लोकों, संवादों पर आधारित प्रश्नोत्तर का अभ्यास करवाया जाएगा । भाषिक कार्य में जैसे – प्रश्न-निर्माण, पर्यायवाची, विलोम शब्द,कर्तृक्रिया-पदचयन, विशेषण-विशेष्य, संज्ञा, सर्वनाम-प्रयोग आदि करवाये जाएंगे ।
2. रुचिरा के पाठ्यक्रमानुसार पाठों का सम्पूर्ण अभ्यास तथा समस्त शब्दार्थ करवाये जाएंगे।
3. श्लोकों का अन्वय रिक्तस्थान के रूप में आएगा ।
4. सन्धि , प्रत्यय अव्यय , संख्या , उपसर्ग ,शब्दरूप और धातुरूप वाक्यों में आएंगे ।
5. प्रश्नपत्र संस्कृतभाषा में आएगा ।

पाठ्य-पुस्तकें - 1. रुचिरा (तृतीयो भाग:)

2. संस्कृत व्याकरण मणिका (8)

प्रथम सत्र

1. रुचिरा-

1. प्रथमः पाठः – सुभाषितानि
2. द्वितीयः पाठः – बिलस्य वाणी न कदापि में श्रुता
3. तृतीयः पाठः – डिजीभारतम्
4. चतुर्थः पाठः – सदैव पुरतो निधेहि चरणम्
5. नवमः पाठः – सप्तभगिन्यः

2. व्याकरण-

1. उपपद विभक्तियाँ - उपपद विभक्तियों पर आधारित अशुद्धि संशोधन , रिक्त स्थानादि
2. स्वर सन्धि (वाक्यों में) - दीर्घ सन्धि, वृद्धि सन्धि, यण् सन्धि
3. उपसर्ग (वाक्यों में) - उपसर्ग युक्त धातुएँ (संस्कृत व्याकरण मणिका - पृष्ठ संख्या 101)

4. प्रत्यय (वाक्यों में) - तुमुन् प्रत्यय
5. शब्द रूप (वाक्यों में) - नदी, पितृ, अस्मद्, युष्मद्
6. धातु रूप (वाक्यों में) - (पाँचों लकारों में) (लट्, लृट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ्ग लकारों में)
   धातुएँ - नम्, दृश्, गम्, कृ

3. 1. अपठित-गद्यांश
2. पत्रलेखनम् संकेताधारितं पत्रम्
3. चित्रवर्णनम् - प्रदत्त चित्र के आधार पर संस्कृत में वाक्य
4. हिन्दी से संस्कृत मे अनुवाद (पाँच वाक्यों का)

द्वितीय सत्र

1. रुचिरा-

1. सप्तमः पाठः – भारतजनताऽहम्
2. दशमः पाठः – नीतिनवनीतम्
3. एकादशः पाठः – सावित्री बाई फुले
4. द्वादशः पाठ: – कः रक्षति कः रक्षितः
5. चतुर्दशः पाठः – आर्यभटः

2. व्याकरण-

1. स्वर सन्धि - (वाक्यों में) गुण सन्धि, अयादि सन्धि
2. अव्यय - (रिक्तस्थान के रूप में) - समस्त अव्ययशब्द
3. प्रत्यय - (वाक्यों में) - क्त्वा तथा ल्यप् प्रत्यय
4. संख्या - (वाक्यों में) - 51 से 100 तक
5. शब्दरूप - (वाक्यों में) -राजन्, मातृ, मुनि, इदम् (तीनों लिंगों में)
6. धातुरूप - (वाक्यों में) - (पाँचों लकारों में) (लट्, लृट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ्ग लकारों में)
   धातुएँ - खाद्, अस्, पच्, भू
7. वाक्यसंशोधनम् – वचन, लिंग, पुरुष , लकार, तथा विशेष्य-विशेषण पर आधारित |

3. 1. अपठित–गद्यांश
2. पत्रलेखनम् – संकेताधारितं पत्रम्
3. चित्रवर्णनम् – प्रदत्तचित्र के आधार पर संस्कृत में वाक्य
4. हिन्दी से संस्कृत मे अनुवाद (पाँच वाक्यों का)